UMA PATHAK
B.A. 1st yr.
Skt. Hons.

2-2-33

985. अजाद्यदन्तम् - यह विधि सूत्र है। अजादि (स्वरादि - अच् + आदि - अइउण्, ऋलृक्, एओङ्, ऐऔच्) पदों के अन्त में अत् (अ) पद का पूर्वप्रयोग होता है।
यथा - ईशकृष्णौ - लौ० वि० - ईशश्च कृष्णश्च

अ० वि० - ईश + सु, कृष्ण + सु।
'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्रानुसार स्वरान्त ईश पद का कृष्ण पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा हुई, 'सुपो धातु प्रातिपदिकयोः' से सु विभक्ति का लोप - ईशकृष्ण - ईश के आदि में ई (अच् है और) अन्त में अ रहने के कारण, 'अजाद्यदन्तम्' सूत्र से ईश का पूर्वनिपात हुआ, 'स्वौजस...' सूत्र से प्रथमा द्विवचन में 'औ' विभक्ति लगाकर 'ईशकृष्णौ' रूप सिद्ध हुआ।

2-2-33

986. 'अल्पाच्तरम्' - यह विधि सूत्र है। इसका अर्थ हुआ कि द्वन्द्व समास में जिस पद में अल्प स्वर (कम स्वर) होंगे उसका पूर्व निपात होगा।
यथा - शिवकेशवौ - लौ० वि० शिवश्च केशवश्च, अ० वि० शिव + सु, केशव + सु।
'चार्थे द्वन्द्वः' से शिव पद का केशव पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित समासाश्च' से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा, 'सुपो..' से विभक्ति का लोप - शिवकेशव, चूंकि शिव में केशव से कम स्वर हैं, इसलिए 'अल्पाच्तरम्' सूत्रानुसार शिव का पूर्वनिपात हुआ। 'स्वौजसमौ०' सूत्र से प्रथमा द्विवचन में 'औ' (प्रयोग) विभक्ति लगाकर शिवकेशवौ रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

987 पिता मात्रा ।।2।70 – यह विधिसूत्र है। सूत्र के अर्थ है यदि माता पद के साथ पिता पद का समास होता है तो 'पितृ' पद विकल्प से शेष रह जाता है।

यथा – पितरौ, मातापितरौ वा – लौ० वि० माता च पिता च। अ० वि० मातृ + सु, पितृ + सु।
'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से माता पद का पिता पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित..' से प्रातिपादिक संज्ञा, 'सुपो धातु प्रातिपदिकयोः' से विभक्ति का लोप होकर मातृ + पितृ बना। 'शेषः' से एक पद 'पितृ' के शेष रहने पर 'यः शिष्यते लुप्यमानार्थाभिधायी भवति' (अर्थात् शेष बचा हुआ पद लुप्त हुए पद का अर्थ भी बोधित करता है। + इसमें 'मातृ' पद को बताता है।)
पुनः 'पितृ' शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा कर 'स्वौजस..' प्रथमा विभक्ति द्विवचन में 'औ' लगाकर –
पितृ + औ – 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' से 'ऋ' का गुण 'अर्' होकर – पितरौ रूप सिद्ध हुआ।
'अन्यतरस्याम्' की जहाँ पक्ष में मान्यता है वहाँ एक शेष नहीं होने पर 'अभ्यर्हितं च' सूत्र से मा माता की श्रेष्ठता अधिक होने के कारण, 'अभ्यर्हितं च' वार्तिकानुसार 'माता' पद का पूर्वनिपात होता है। 'आनङ् ऋतो द्वन्द्वे' से मातृ के 'ऋ' का आनङ् (आन् - आ) आदेश हुआ तथा 'न्' का लोप होने पर एवं गुण होने से प्रथमा द्विवचन में 'मातापितरौ' रूप सिद्ध हुआ।